रंगो के त्यौहार होली को अलौकिक रीती से मनाए

भारत में होली-धुलेटी का त्यौहार महत्वपूर्ण त्यौहारो में से एक है। यह हिन्दू त्यौहार विश्व के अन्य देशों में जैसे कि सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, यु.के. और नेपाल में भी काफी लोकप्रिय है। यह दोलयात्रा, रंगोत्सव और वसंतोत्सव के रूप में भी जाना जाता है। आंध्र प्रदेश में होली का त्योहार "काम दहन" से जाना जाता है। होली का त्यौहार फागुन मास की पूनम पर मनाया जाता है। इस दिन मुख्य चौराहो पर गाय के गोबर से बने छाने और लकड़ी से 'होली' खड़ी की जाती है। सब लोग नाचते गाते हुए वहाँ इकट्ठा होते है और होली को जलाया जाता है | लोग होली की प्रदक्षिणा करते है और नारियल आदि से पूजा करते है। हाला कि भारत में अलग-अलग प्रांतों और समुदायों में होली अलग अलग तरीके से मनाई जाती है, लेकिन हर व्यक्ति की भावना एक ही होती है। होली मनाना अर्थात आसुरी तत्वों को नष्ट करना और दैवीय शक्तियों का सम्मान करना।

होली के दूसरे दिन धुलेटी मनाई जाती है। सुबह से एक दूसरे पर अबिल , गुलाल और कसुदा के रंगों को लगाकर अपना आनंद और खुशी व्यक्त करते हैं और शाम को किसी स्थान पर दावत मनाते है।

हमारे अधिकांश त्योहार पौराणिक कथाओं से जुड़े हैं। इन सभी कथाओ में कुछ न कुछ आध्यात्मिक रहस्य छिपे हुए हैं। त्यौहार से जुडी कथाओ में हमने कहानियों को पकड़ के रखा लेकिन उसके मर्म को और आध्यात्मिक रहस्य को भूलते गए। इससे त्योहारों के उत्सव में एक प्रकार की विकृति आने लगी। होली भी उनमें से एक है।

होली के त्यौहार के साथ कई कहानियां जुड़ी हुई है, इसमे मुख्य कथा भक्त प्रहलाद की है| पुराने काल में हिरण्यकश्यप नामक असुर बहुत बलवान था, ब्रह्मा के वरदान के कारण वह अमर बन गया था। वह खुद को भगवान मानने लगा था। उसने अपने राज्य में भगवान का नाम लेने पर प्रतिबंध लगा दिया था। हिरण्यकश्यप का पुत्र, प्रहलाद भगवान विष्णु का परम भक्त था। प्रहलाद की ईश्वर भक्ति से नाराज, हिरण्यकश्यप ने उसे कई प्रकार के कष्ट दिए। फिर भी, उसने ईश्वर भक्ति का अपना मार्ग नहीं छोड़ा। हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को एक वरदान था। इसके पास एक चुनरी थी, इसे धारण करने से अग्नि उसे जला नहीं सकती थी। अंत में हिरण्यकश्यप ने आदेश दिया कि होलिका अपनी गोद में प्रहलाद को लेकर अग्नि पर बैठे, ताकि प्रहलाद जलकर खाक हो जाए। प्रहलाद ने अपने पिता की आज्ञा का पालन किया और अपने इष्टदेव विष्णु को याद किया अंत में, जब आग जलाई गई, तो चुनरी होलिका के सिर पर से उड़ गई और प्रहलाद से लिपट गई, इसलिए होलिका आग में जल गई और प्रहलाद सही सलामत बाहर निकल आया।

हमारी सभी पौराणिक कथाए प्रतीकात्मक हैं। भक्त प्रहलाद की यह कहानी भी हमें एक दिव्य संदेश देती है। प्रहलाद का अर्थ है प्रसन्नता। हिरण्यकश्यप और होलिका अहंकार, प्रतिशोध और उत्पीड़न का प्रतीक है जो अग्नि में खाक हो जाता है| और प्रेम, आनंद का प्रतीक प्रहलाद का अस्तित्व वैसा ही बना रहता है| होली के अन्य आध्यात्मिक

और सामाजिक रहस्यों को समझने के बाद होली का उत्सव मनाएंगे तो स्वयं के और सभी के हित में रहेगा|

आज विश्व की परिस्थिति को देखते है, तो जरुर ख्याल आता है कि यही कलयुग के अंत का घोर अंधकार और धर्म ग्लानि का समय चल रहा है। इस समय समग्र विश्व में दु:ख, अशांति, भय, हिंसा, पापाचार और भ्रष्टाचार व्याप्त हैं। ऐसे समय में परमात्मा शिव, गीता में दिए गऐ अपने वचन अनुसार, सृष्टि के नवनिर्माण अर्थ, ब्रह्मा तन में दिव्य अवतरण कर सतयुगी दुनिया की स्थापना कर रहे है| वर्तमान समय जब परमात्मा शिव ब्रह्मा के मुख से ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर हम मनुष्य आत्माओं को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे महाविकारो से मुक्त कर रहे है तब होली धुलेटी का महत्व बढ़ जाता है।

होली, अग्नि का और होलिका, विकारों का प्रतीक है। हमने सच्ची होली मनाई, ऐसा तब माना जाएगा जब हम परमात्मा की इस ज्ञान योग की शिक्षा को अपने जीवन में धारण कर, आत्मचिंतन कर, योग-अग्नि प्रज्वलित कर विकारो, विकर्मों और कर्मबंधन को इस योगाग्नि में भस्म करके अपने जीवन में दैवी गुणो को धारणकर जीवन श्रेष्ठ बनाएंगे। यदि हम ऐसा करते हैं, तो ऐसे कनिष्ठ समय में भी प्रहलाद जैसे निखरकर सुरक्षित बाहर निकल जाएंगे। दूसरे शब्दों में हम अपने मन के नकारात्मक विचारों और भ्रष्ट विकारो को ज्ञान रूपी होली की अग्नि में नष्ट करते हुए मन को शुद्ध बना सकते हैं।

प्राचीन काल में पानखर के बाद सुखी लकड़ीया, पत्ते और वृक्षो को जलाने से सफाई हो जाती है ऐसा मानते थे लेकिन आज होली पर वृक्षों का सफाया हो रहा है। जिस के कारण लकड़ी की कमी और पर्यावरण की समस्या खड़ी हो रही है। ऐसे समय पर होली में मूल्यवान और अन्य कार्यों में बहुत ही उपयोगी लकड़ी जलाना कितना योग्य है? आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाए तो होली में कोई स्थूल अग्नि की बात नहीं है, लेकिन ईश्वर से प्राप्त ज्ञान अग्नि की बात है, जो हमारे मन को प्रज्वलित कर नकारात्मकता को भस्म करने का संकेत देती है।

धुलेटी महोत्सव अर्थात रंगोत्सव। इस दिन हम एक-दूसरे पर अलग-अलग रंग बिखेरने का आनंद लेते हैं। भल हम वो करे लेकिन रंगोत्सव का सही आध्यात्मिक रहस्य यह है की हम आज के दिन परमात्मा के संग के रंग में और उसने दिए हुए ज्ञान के विविध रंगो में, मीरा की तरह, रंग जाए और मस्त हो जाए। जीवन में मूल्य और दिव्य गुण के रंग लगाए वही उचित होगा| आज तो रंग बिखेरने में भी विकृतिया आ गई है। लोग प्राकृतिक रंगों के बजाय रासायनिक रंगों का एवं घातक चीज - वस्तुओं का भी उपयोग करते है जो हमें बहुत नुकसान पहुंचाता हैं।

आज हमारे हर त्यौहार को मनाने में कोई न कोई विकृति देखने को मिलती है। धूलेटी में *"बुरा मत मानना होली है"* के बहाने कहीं न कहीं एक विकृत मानसिकता दीखाई देती है। आज लोगों में मनोविकृतियाँ बढ़ रही है। सामान्य परिस्थितियों में, वे समाज के डर से, अपनी विकृति को पूरी तरह से प्रकट नहीं करते हैं। लेकिन होली के दिन व्यक्ति को स्वतंत्रता मिलती है। हंसी, मजाक, उपहास और मस्ती में अपनी विकृति का संतोष लेते है| लेकिन वो अपनी विकारी दृष्टि-वृत्ति से होली के पवित्र त्यौहार की गरिमा और अस्मिता को ठेस पहुंचाने का काम कर रहे है।

आद्यात्मिक संस्था ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में होली विशिष्ट रूप से मनाई जाती है। संस्था ने होली की

विशेष व्याख्या की है जो जानने योग्य है। होली को हिन्दी में 'होली' कहते हैं। जिसका एक अर्थघटन होता है होली माना **'हो गया'**, अर्थात जो हो गया है वो अतीत है भूतकाल है उस को भूल जाओ। वर्त्तमान में जिओ और उसे सफल बनाओ। अंग्रेजी में होली **(holy)** का अर्थ पवित्र होता है। यानी होली के दिन हमें हमारे शरीर, मन, और बुद्धि को पवित्र बना कर पवित्रता के सागर परमात्मा शिव को याद करना है।

----- 0 ----- 0 -----

ब्र. कु. प्रफुल्लचंद्र

सानडिएगो ; यु एस ए

(M) +91 98258 92710